UGC Sl. No. 46977 Reg. No. 1680/2011-12

ISSN : 2272-1832

शब्दार्थ

त्रैमासिक पत्रिका

साहित्य, कला, संस्कृत और शोध की लोकधर्मी पत्रिका

अंक-17-18, संयुक्तांक, जुलाई 2017-दिसम्बर 2017

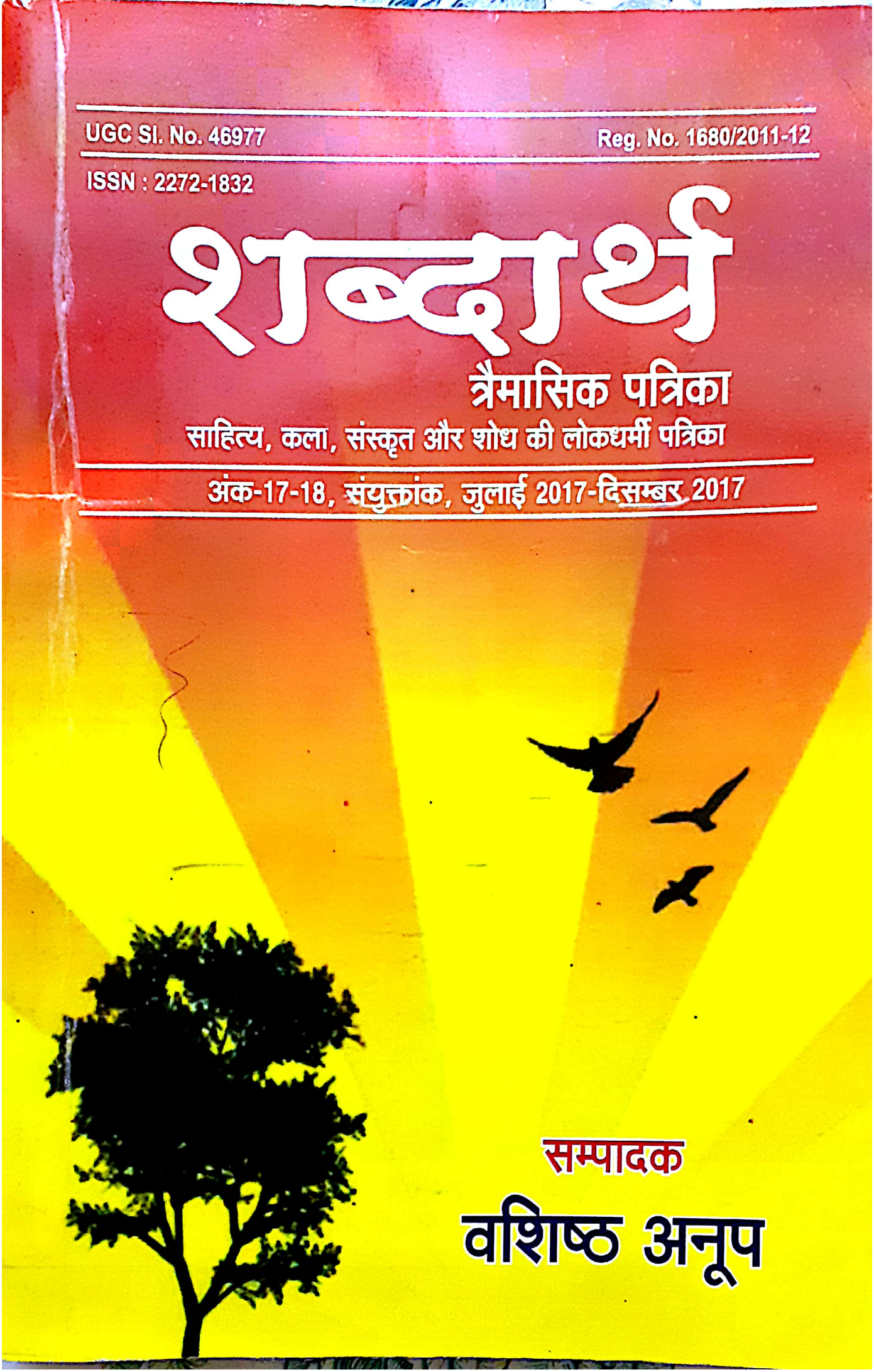

सम्पादक

वशिष्ठ अनूप

Scanned by CamScanner

UGC Sl. No. 46977 Reg. No. 1680/2011-12

ISSN : 2272-1832

शब्दार्थ

त्रैमासिक पत्रिका

(साहित्य, कला, संस्कृति और शोध की लोकधर्मी पत्रिका)

अंक- 17-18, संयुक्तांक, जुलाई 2017 - दिसम्बर 2017

सम्पादक

वशिष्ठ अनूप

प्रोफेसर, हिंदी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी-221005

सम्पादकीय सम्पर्क

204/11, राजेन्द्र अपार्टमेंट्स,

रोहित नगर (नरिया) वाराणसी

शब्दार्थ अकादमी, वाराणसी

Scanned by CamScanner

अनुक्रमणिका

- सुदामा पाण्डेय 'धूमिल' : राजनीतिक एवं सामाजिक जीवन दृष्टि — 1–6
  शिव प्रताप सिंह
- 'बेतवा बहती रही' के आगे.....। — 7–13
  डॉ0 विश्वजीत कुमार मिश्र
- प्रेमचन्द की कहानियों में नारी विमर्श — 14–17
  बृजेश कुमार
- पं0 विद्यानिवास मिश्र के लिए लोक–संस्कृति और संस्कृत–साहित्य — 18–21
  उदय प्रताप पाल
- हजारी प्रसाद द्विवेदी का उपन्यास अनामदास का पोथा : एक लोकपरक आख्यान — 22–28
  डॉ0 अनुपम पटेल
- श्री अरविंद दर्शन में नैतिकता : विकास के साधन के रूप में — 29–30
  सीमा चौरसिया
- स्वामी दयानन्द सरस्वती की त्रैतवादी अवधारणा — 31–39
  वीरेन्द्र कुमार
- भारतीय समकालीन कला में जहाँगीर साबावाला की फंतासी कलाकृतियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन — 40–45
  प्रीति यादव
- हिन्दी सिनेमा में महिला चरित्र के बदलती छवि का ऐतिहासिक सर्वेक्षण — 47–51
  अंकिता पाठक

Scanned by CamScanner

- **असंगठित क्षेत्र : भारतीय अर्थव्यवस्था का इंजन** 52–65
  विनीत कुमार तिवारी
- **प्राचीन भारतीय समाज में वर्ण–व्यवस्था** 66–70
  सत्य प्रकाश
- **मिर्जापुर जिले से प्राप्त प्रागैतिहासिक चित्रों का अध्ययन** 71–74
  राकेश कुमार यादव
- **राजा की स्थिति वैदिक एवं पौराणिक काल के विशेष सन्दर्भ में** 75–80
  आलोक कुमार सिंह
- **बौद्ध धर्म में पर्यावरणीय संरक्षण के विचार** 81–84
  अखिलेश कुमार
- **गुप्तकालीन नारी : शालभंजिका रूप में** 85–89
  डॉ0 स्मिता सिंह
- **बौद्ध साधना का आध्यात्मिक आदर्श : प्रवज्जा** 90–92
  अजेन्द्र प्रताप राय
- **उत्तर प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की आर्थिक स्थिति पर मनरेगा के प्रभाव का अध्ययन** 93–100
  Nidhi Tripathi
- **संगीत के संवर्द्धन में दरबारी कलाकारों की भूमिका** 101–109
  रिंकी सिंह
- **महाभाष्यस्थश्लोकवार्तिकानां संक्षिप्तः परिचयः** 110–115
  धर्मराजबागः
- **लोक, शास्त्र और आदिवासी जीवन** 116–121
  डॉ. सूर्यकांत त्रिपाठी

Scanned by CamScanner

- महिलाओं और बच्चों के मानवाधिकार : एक सैद्धांतिक विवेचन — 122–129
  कृष्ण मोहन कुमार
- ग्रामीण विकास में पंचायती राज की भूमिका — 130–141
  मुन्ना कुमार
- पंचायती राज संस्थाओं की पृष्ठभूमि एवं विकास — 142–150
  डॉ0 ललिता कुमारी
- बच्चन के साहित्य में राष्ट्रीय चेतना के स्वर — 151–156
  डॉ0 नम्रता गुप्ता
- प्राचीन शिक्षा का केन्द्र : विक्रमशिला — 157–160
  डॉ0 मनोज कुमार
- गाँधीजी के चिंतन में राजनीति का आध्यात्मिककरण और प्रशासनिक भ्रष्टाचार — 161–167
  डॉ0 प्रभाकर
- राही मासूम रज़ा और 'सीन 75' उपन्यास पटकथा की संरचना — 168–170
  राहुल मिश्रा
- मैला आंचल उपन्यास में स्त्री – विमर्श के आयाम — 171–174
  डॉ0 अंजु लता

✷

Scanned by CamScanner

मैला आंचल उपन्यास में स्त्री – विमर्श के आयाम

डॉ0 अंजु लता*

मैला आंचल उपन्यास का प्रकाशन आजादी के बाद होता है। यह वो समय था जब विभिन्न प्रकार की विचारधाराओं के प्रकाश में आजादी की लड़ाई लड़ी जा रहीं थी। गांधीवाद, मार्क्सवाद, हिंदुत्व आदि विचार अपने चरम पर विकसित हो रहे थे। मैला आंचल उपन्यास भारत छोड़ों आंदोलन के चरमोत्कर्ष से लेकर गांधी की हत्या तक की कथा कहती है। बिहार के पूर्णिया अंचल की कहानी कहते हुए लेखक कहते है कि इस कथा में फूल भी है और शूल भी । आंचलिक उपन्यास की अपनी विशेषताएं होती है। यह उपन्यास इन विशेषताओं से परिपूर्ण हैं। पूर्णियां अंचल की सीमा से एक तरफ नेपाल दूसरी तरफ बंगाल और पाकिस्तान की सीमा रेखा से इसकी बनावट पूरी होती है। विभिन्न प्रकार के भाषा भाषी क्षेत्रों से घिरे होने के कारण इस क्षेत्र का विकास अलग ढंग से होता है।

मैला आंचल एक प्रखर राजनैतिक उपन्यास के रूप में साहित्य में अपनी सार्थकता को स्थापित करता है। बावनदास, बालदेवजी, कालीचरण, लक्ष्मी कोठारिन, डॉ. प्रशांत आदि अपने आप में सिर्फ चरित्र ही नहीं वरन् उस दौर में चल रहे विचारों के प्रतिनिधि भी हैं। सब किसी ना किसी उद्देश्य को लेकर राजनीतिक में उतर आये है। आरंभ में कहानी बहुत ही चुलहबोध और मजाक के रूप में चलती है किस तरह देश में विकसित राजनैतिक समझदारी को गांवों की जनता ग्रहण करती है। जाति के समीकरण का टूटना, राजनैतिक चेतना का विकसित होना, अर्थात गांव की सामंती व्यवस्था के बीच विकसित स्वतंत्रता और समानता के भाव का विकास अत्यंत सहज ढंग से होता दिखाई देता है। जैसे – जैसे कथा आगे बढती है कहानी लगातार विड़बनाबोध का शिकार होती है। अंत में आकर आस्मिता का प्रश्न महत्वपूर्ण हो जाता है। उपन्यास में बालदेव जी सोचते है कि '' वह पुरैनियां जाएगा, वहीं से चन्ननपट्टी चला जाएगा। वह अब अपने गांव में रहेगा, अपने समाज में, बड़ी चीज हैं। .....जाति की बात ऐसी है कि सभी बड़े – बड़े लीडर अपने जाति की पार्टी में हैं। – यह तो राजनीतिक हैं!''

भारतीय इतिहास में राष्ट्रवादी आंदोलन तथा स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व की लड़ाई के दौरान देश की जनता अपनी अस्मिता से बाहर आती दिखाई देती है। साम्राज्यवादी शक्ति से लड़ने के लिए लेकिन एक जुट होने वाली जनता का उल्लास उपन्यास में स्वतंत्रता प्राप्ति के जश्न से पता लगाया जा सकता है। बाद में अधिक समय तक यह स्थिति बनी नहीं रह सकी। बहुत

---

* सहायक प्रोफेसर, तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर, असम।

Scanned by CamScanner